कक्षा – 8 पाठ – 5 _ चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

- प्राचीन काल से ही हमारे जीवन में पत्रों का विशेष महत्व रहा है। पत्र ना केवल रोगों की जानकारी एक दूसरे तक पहुंच जाती के साधन रहे हैं बल्कि वे लोगों की भावनाओं की अभिव्यक्ति का भी एक जरिया रहे हैं।
- निश्छल भावों और विचारों का आदान-प्रदान पत्रों द्वारा ही सम्भव है। पत्रलेखन दो व्यक्तियों के बीच होता है। इसके द्वारा दो हृदयों का सम्बन्ध दृढ़ होता है। अतः पत्राचार ही एक ऐसा साधन है, जो दूरस्थ व्यक्तियों को भावना की एक संगमभूमि पर ला खड़ा करता है और दोनों में आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करता है।

- हालांकि आधुनिक काल में संचार के बहुत से उत्तम और नवीन साधन मौजूद है लेकिन आज भी लोगों को पत्र लिखना उतना ही पसंद है जितना प्राचीन काल में।
- जिस प्रकार हम कोई अपने पत्र दिखाता है जो को अर्सो पहले के होते हैं तो हमें बहुत अच्छा लगता है। ऐसे ही हम भी अपनी आने वाली पीढ़ी को पत्र के महत्व समझा सकते है।

- बेशक आज बाजार में दुनियाभर के मोबाइल फोन उपलब्ध है लेकिन पत्रों को लिखने और पढ़ने में जो हमें आता है वह मोबाइल फोन के मैसेज नहीं आता है। मोबाइल फोन में आए संदेश पढ़कर हम जिस प्रकार रद्द कर देते हैं उसी प्रकार हम अपने पत्रों को पढ़कर रद्द नहीं करते हैं बल्कि उन्हें सजा के रखते हैं इसलिए हमें पता चलता है कि पत्रों का हमारे जीवन में कितना विशेष महत्व है ।
- हम पत्र लिखते समय अपनी भावनाओं का सावधानीपूर्वक वर्णन करते हैं । यही कुछ ऐसी चीजें हैं जिनकी वजह से आधुनिक संचार माध्यम होने के बाद भी पत्र हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

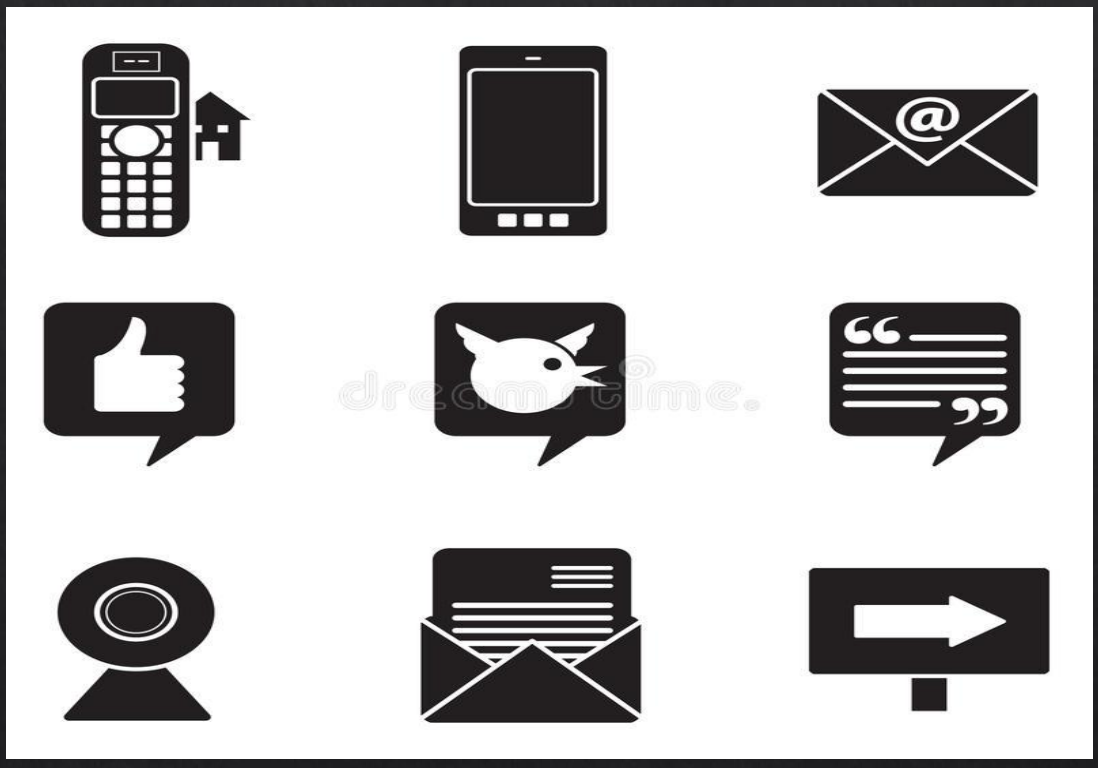

- भले आज के डिजिटल युग में पत्र अप्रासंगिक हो गए हों और अपने संदेशों को आदान प्रदान के लिये ईमेल, व्हाट्सएप और S.M.S. जैसे आधुनिक साधन लोकप्रिय हो गए हों, लेकिन पत्रों का अपना ही एक अलग महत्व था और रहेगा।

- पत्रों से जो आत्मीयता का बोध होता था, वैसी आत्मीयता का अनुभव ईमेल, व्हाट्सएप आदि में नहीं होता। एक समय था जब अपने प्रियजन के पत्र का कई दिनों से इंतजार रहता था और डाकिया अपने घर के सदस्य की तरह लगता था। डाकिये की सूरत देखते ही मन उल्लासित हो जाता था कि शायद अपने किसी प्रियजन का पत्र आया हो और जब वो पत्र आता था तो उसको पढ़ कर मन अंदर तक पुलकित हो जाता था, आत्मीयता से भर जाता था। बार-बार उस पत्र को पढ़ते थे।

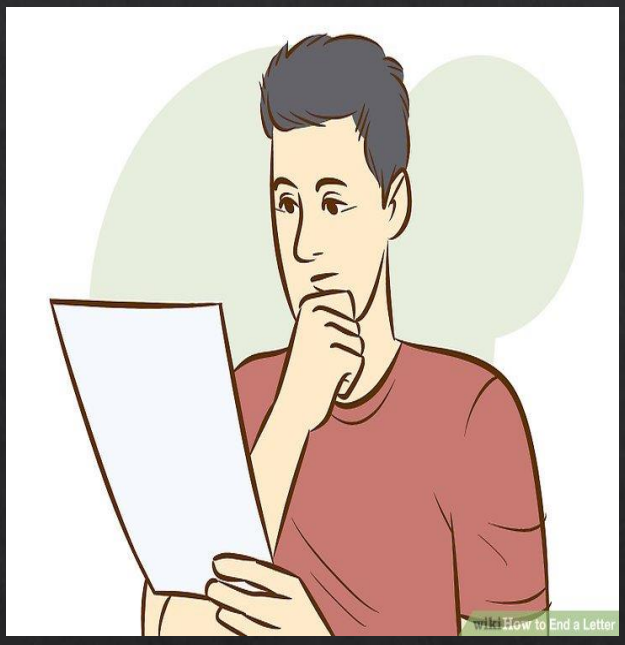

- पत्रों को लिखने की भी अपनी एक कला होती थी और लोग अपने विचारो, अपनी भावनाओं और अपनी संवेदनाओं को पूरी तरह अपने पत्र में उड़ेल देते थे। तब पत्रों का संसार अलग ही था। अपने विचारों अपनी भावनाओं को संप्रेषित कर शब्दों के माध्यम से पत्र में उकेर कर, फिर उसे कोमलता से लिफाफे में रखकर पत्र पेटी में डाल कराने का एक अलग ही अनुभव था। उसके पश्चात उस पत्र के जवाब के इंतजार का इंतजार करना और दिन गिनना एक बेचैनी भरा सुखद एहसास देता था। इंतजार की वो घड़ियां एक अनोखी होती थीं।

- पत्रों को लिखने की भी अपनी एक कला होती थी और लोग अपने विचारो, अपनी भावनाओं और अपनी संवेदनाओं को पूरी तरह अपने पत्र में उड़ेल देते थे। तब पत्रों का संसार अलग ही था। अपने विचारों अपनी भावनाओं को संप्रेषित कर शब्दों के माध्यम से पत्र में उकेर कर, फिर उसे कोमलता से लिफाफे में रखकर पत्र पेटी में डाल कराने का एक अलग ही अनुभव था। उसके पश्चात उस पत्र के जवाब के इंतजार का इंतजार करना और दिन गिनना एक बेचैनी भरा सुखद एहसास देता था। इंतजार की वो घड़ियां एक अनोखी होती थीं।
- इसलिये पत्रों का महत्व पहले हमेशा था और आगे भी बना रहेगा, शायद कभी पत्रों का वो युग वापस लौट कर आये।

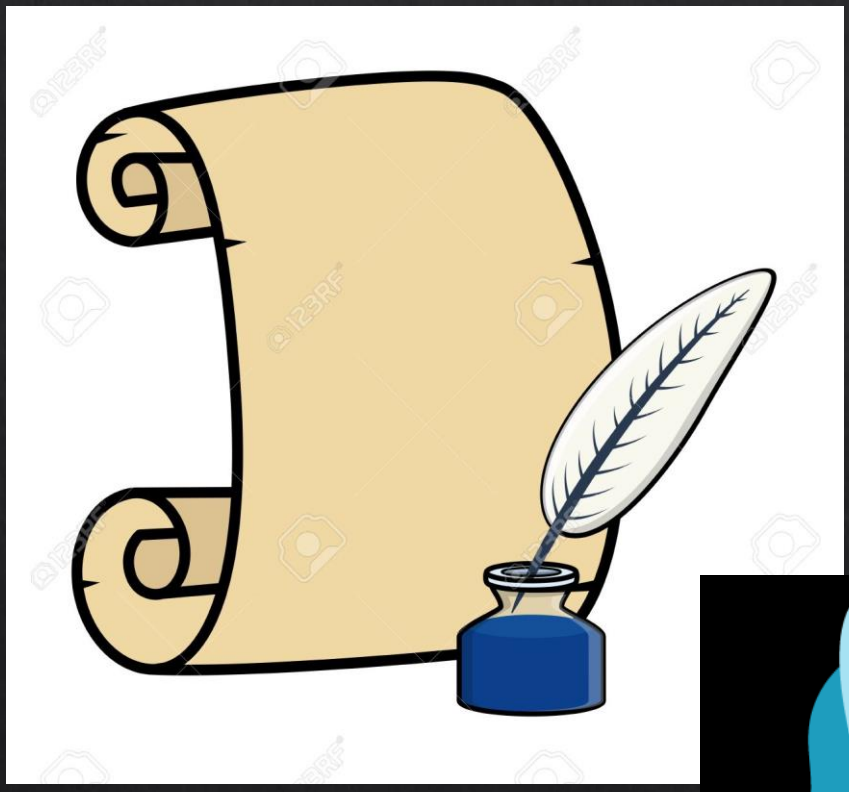

❖ चिट्ठी

❖ एसएमएस

पाठ प्रवेश

- अरविंद कुमार जी अपने इस लेख के द्वारा चिट्ठियों की अनूठी दुनिया के बारे में बताना चाहते हैं कि किस तरह से चिट्ठियों और पत्रों की दुनिया अनूठी है, अनोखी है। आजकल का जमाना वाट्सअप, एसएमएस, मोबइल का जमाना है कोरियर का जमाना है। चिट्ठियाँ कहीं पीछे खो गई है लेकिन एक जमाना था जब चिट्ठियों की बहुत एहमियत थी। लोग डाकिया का इंतजार करते थे और चिट्ठियों को सहेज कर रखते थे। अपने प्रियों जानों कि चिट्ठियों को सहेज कर रखना और पुरानी यादों को फिर ताजा करना बहुत ही सरल था। लेखक ने चिट्ठियों की महत्वता के बारे में बताया है कि पहले किस तरह की चिट्ठियां होती थीं।

- लेखक 'पत्र' की महत्ता बताते हैं की आज का युग वैज्ञानिक युग है। मनुष्य के पास अनेक संचार के साधन हैं फिर भी मनुष्य पत्रों का सहारा जरूर लेता है। वे कहते हैं इनके नाम भी भाषा के अनुसार अलग-अलग हैं। तेलगू में उत्तरम, कन्नड़ में कागद, सस्कृत में पत्र, उर्दू में खत, तमिल में कडिद कहा जाता है। आज भी कई लोग अपने पुरखों के पत्र सहेजकर रखें हैं। हमारे सैनिक अपने घर वालों के पत्रों का इंतजार बड़ी बेसब्री से करते हैं।

- उन्होंने यह बताते हुए कहा है कि आज भी सिर्फ भारत में प्रतिदिन साढ़े चार करोड़ पत्र डाक में डाले जाते हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी पत्र के महत्व को माना है। लेखक कहते हैं कि २०वीं शताब्दी में पत्र केवल संचार का साधन ही नहीं अपितु एक कला मानी गई है। इसे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया तथा कई पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। लेखक का मानना है इस संसार में कोई ऐसा मनुष्य नहीं होगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा हो।

- पत्र सिर्फ एक संचार माध्यम ही नहीं हैं, ये मार्गदर्शक की भूमिका भी निभाते हैं। मोबाइल से प्राप्त एसमएस तो लोग मिटा देते हैं परन्तु पत्र हमेशा सहेज कर रखते हैं। आज भी संग्रहालय में महान हस्तियों के पत्र शोभा बने हुए हैं। महात्मा गांधी के पास पूरे विश्व से पत्र आते थे और वे उनका जवाब तुरंत लिख देते थे। 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' और 'महात्मा गांधी' के पत्र व्यवहार को "महात्मा और कवि" के शीर्षक से प्रकाशित किया गया है।
- भारत में पत्र व्यवहार की परम्परा बहुत पुरानी है। सरकारी की अपेक्षा घरेलु पत्र मुख्य भूमिका निभाते हैं क्योकि ये आम लोगो को जोड़ने का काम करते हैं। चाहे गरीब हो या अमीर सभी को अपने प्रियजनों से प्राप्त पत्र का इन्तजार रहता है। गरीब बस्ती में तो मनीऑर्डर लेकर आने वाले डाकिए को लोग देवता समझते हैं। अंत में वे कहते हैं कि अत्यधिक संचार साधनों के होने के बावजूद भी पत्रों की अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका है।